युवा वार्ता

Bihar

YOUTH NETWORK

बबली

मेरे गांव में एक लड़की रहती थी वह लड़की एक लड़का से बात करती थी वह लड़की घर पर ना बता कर लूंगा मेरे पास बताइए जब मेरे घर पर आए थे पढ़ने के लिए हम पहले से पढ़ने के लिए बैठे थे छत पर वह लड़की आए और हमें आवाज दी तो हमने सुना तो बोली कि छत पर है वह आई बोल रही थी कि दोस्त तू पढ़ाई कर रही है तो मैं बोली हूं वह मेरे पास आकर बैठ गई और मुझसे मोबाइल मांगने लगी पहले मेरे पास छोटा वाला मोबाइल था वह बोली देना हम बोले कि किस से बात करेगी वह बोली कि पापा से बात करेंगे तो हम दे दिए हमें नहीं पता था कि वह एक लड़का से बात करती है बाद में वह बताएं कि मैं एक लड़का से बात करते हैं तो हम पूछे कि वह लड़का कहां का है बोली कि घंटा का है हम बोले कि इस बात के बारे में किसी को बताई तो बोली कि नहीं सिर्फ तुम्हें बता रहे हैं वह लड़की दिल्ली मेरे घर पर आने लगी और मेरे मोबाइल से बात करने लगी और मेरे मोबाइल में रिकॉर्ड होते थे इस बात को उसे पता नहीं था तो मेरे पापा ने हमसे पूछा कि यह लड़की बार-बार तुम्हारे पास आती है क्या करती है तो हम बोले कि पापा वह पढ़ने के लिए आती है मेरे पापा ने अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था तो 1 दिन रात में 12:00 पापा मेरे कमरे के दरवाजे के पीछे से सुन रहा था कि यह दोनों रात में क्या करती है मेरे पापा ने उस लड़की की बात सुन ली और पापा ने जब 2 दिन बीत गया और मेरे पापा को भी यह बात पता चल गई थी कि मेरे मोबाइल में रिकॉर्ड होता है और वह सुन लिया तूने सोच रहे थे कि मेरी बेटी तो नहीं बात किया है और वह सारी बात सुनी तो अकील आया कि मेरी बेटी ने किसी लड़के से बात नहीं किया है जब मेरे पापा ने हमसे पूछा कि मेरी बेटी ने किसी लड़के से बात नहीं किया है जब मेरे पापा ने हमसे पूछा कि वह लड़की किसी से बात करती है कि हम डरे डरे से बोलेगी पापा हम नहीं जानते हैं पापा बोले कि जब वह लड़की किसी से बात करती है तो तुम उसको मोबाइल क्यों दी फिर हम बोले कि पापा हम उसको मोबाइल नहीं दिए हैं जब हम पढ़ाई करके सो जाते थे तो वह मेरा मोबाइल लेकर बात करने लगती थी तो फिर सबसे पहले उसकी या रिकॉर्ड उनके माता-पिता को सुनाया उनकी मम्मी पापा ने विश्वास नहीं किया वह बोल रहे थे कि आपकी बेटी ही बात करती होगी और मेरी बेटी पर इल्जाम लगा रहे हैं तो फिर मेरे पापा ने दो चार महिलाओं को यह रिकॉर्ड सुना दिया फिर पापा बोले कि इस लड़की के साथ नहीं रहना है फिर मैं उस लड़की के साथ नहीं रहने लगे तो उस लड़की को गांव वाले लोग गलत समझने लगे थे कि अगर हम मेरी बेटी भी उनके साथ जाएगी तो वैसा ही बन जाएगी एक बार ऐसा हुआ कि जिस लड़के से बात करती थी वह उसी लड़के से भाग गए हैं उनकी मम्मी पापा परेशान हो गई की मेरी बेटी कहां गई है घर वाले लोग खोजने लगे 3 घंटे के बाद हुआ लड़की अपने आप घर आ गई तो सब लोग उस लड़की से पूछने लगी कि कहां गई थी इतना देर से वह लड़की कुछ नहीं बोल रही थी तो उस लड़की के पापा लड़की को खूब मारा पीटा फिर भी वह कुछ नहीं बोल रही थी और गांव की महिला भी बोलने लगी कि एक लड़का देख कर जल्द से जल्द शादी कर दिया जाए नहीं तो गांव की लड़की भी बिगड़ सकती है लड़की के घर वाले लोग लड़का देखने के लिए जाने लगे लड़का देखकर उनके साथ शादी तय कर दी लड़का 22 साल का था लड़की 16 साल की थी घर वाले लोग और गांव वाले लोग मिलकर मंदिर में जाकर दोनों की शादी करवा दी लड़की अपनी ससुराल चली गई तक उनके माता-पिता सोच रहे थे कि टेंशन दूर हो गया

क्या हम अलग हैं और नीच हैं मां !

ये उस समय की बात है जब मैं चौथी कक्षा में था। मुझे यह समझ नहीं थी कि एक चीज जाति होती है ,जिसके आधार पर लोग अलग होते हैं कोई कुछ कम अलग , कोई कुछ ज्यादा अलग ही नहीं, बड़ा और छोटा भी । स्कूल ने ही पहली बार जाति का अहसास करवाया था। उन्होने दाखिला लेते समय ही पूछ लिया था की तुम किस जाति हो। स्कूल में डेस्क नहीं होते थे बोरे पर बैठा करते थे। एक मंज़िला स्कूल था, खुला था। ब्लैक बोर्ड से पढ़ाई होती थी। बड़ी – बड़ी खिड़कियाँ थी, खूब हवा आती थी। एक ही टीचर होते थे जो पूरा दिन पढ़ाया करते थे।

मैं जब स्कूल से घर लौटा। घर में सिर्फ माँ ही थी और कोई नहीं था। माँ रसोईघर में खाना बना रही थी। शाम का वक्त था। पिता जी की 2007 में ही रोहताश ज़िला में जॉब लग गई थी, वो टीचर थे तो वहीं पर रहते थे। वो कम ही गाँव लौटते थे। मैं अपनी सारी बाते माँ को ही बताता था।

आज भी मैं माँ को बताने की हिम्मत जुटा रहा था। मेरे साथ स्कूल में रोजाना कुछ न कुछ ऐसा होता था जिसके कारण मैं स्कूल में परेशान रहता था ।पढ़ाई में भी मन नहीं लग रहा था। ऐसा पहले भी कई बार हो चुका था । सोचता था कि मैं अपनी माँ को सब कुछ बता दूँ लेकिन मैं हिम्मत ही नहीं कर पाता था। मुझे डर था की कहीं डांट ना पड़े, पिता जी को मालूम हो गया तो क्या होगा। इन्हीं सब बातों के भय के कारण मैं चुप रह जाता था। साथ ही साथ ये भी सोचता था की अगर मैं बता दूँगा तो शायद मेरा स्कूल से नाम ही ना कट जाये। मैं स्कूल नहीं छोडना चाहता था।

आज माँ जब रसोईघर में खाना बना रही थी तो मैंने तय किया मैं आज सब कुछ माँ को बता दूंगा। मैं रसोईघर में गया तो माँ अपने काम में व्यस्त थी। उन्होने मेरी तरफ देखा, मुझे उदास देखकर वो बोली, “उदास क्यों दिख रहे हो, क्या हुआ?”

मैंने उन्हे देखकर बोलने की कोशिश की। पर समझ में नहीं आ रहा था कि कहाँ से शुरू करूँ और क्या बोलू। वो फिर से बोली, “अरे बताओगे भी कि क्या हुआ है?”

मैंने उन्हे बहुत ही धीमी और डरने की आवाज़ में बोला, “माँ आज हमारे स्कूल में कुछ लड़कों ने हमारे साथ वही व्यवहार किया जिसे हम छूआछूत के रूप में सुनते आए हैं।"

वो घबरा कर बोली, “क्या हुआ बताओ।“

मैंने उन्हे सारी बात बताई। “माँ हम सुबह बस्ता लेकर स्कूल गए और बोरा निकाल कर क्लास में बैठे। हम जहां पर रोजाना बैठते थे आज वहाँ की जगह आगे की ओर जाकर बैठ गए। वहां हम इसलिए बैठे थे की सर की बात वहाँ पीछे तक तक साफ सुनाई नहीं देती थी। मैं जहां आज बैठा था वहाँ पर रवि, संजीत और रणजीत साथ में बैठते थे। जो बड़ी जात के लड़के थे। वो उस जगह पर आकर बैठने लगे। मैं उनकी जगह पर बैठा हुआ था मुझे देखकर वो रणजीत ने बोला, “तू चमार होकर हमारी जगह पर हमारे बीच बैठेगा? यहाँ क्यों बैठा? चल बे यहाँ से उठ।“

उसने हमे उस जगह से उठा दिया और हमारा बस्ता बोरा सब दूर फेंक दिया।
मुझे बहुत दुख हुआ, मैं आज आगे की ओर बैठना चाहता था लेकिन क्लास में मुझे बैठने नहीं दिया। मैं दुखी होकर क्लास टीचर के पास गया। हमारे क्लास टीचर रामविनय प्रसाद स्टाफ रूम मे बाकी टीचर के साथ बैठे थे।

मैं सोच रहा था की हमें जब कोई चमार बोलता है या हमारी जाति के बारे में पूछता है तो हमें कोई दुख नहीं होता। ना ही बुरा लगता। लेकिन जब आज उन्होने हमारे साथ ये ऊंच – नीच किया तब दुख लगा।

मैंने उन्हे सारी बात बता दी तो उन्होने मुझे ही डांट दिया और कहा, “वो ठीक ही तो किए। तुम वहाँ पर बैठे ही क्यों? तुम्हें उनके साथ बैठना ही नहीं चाहिए था। तुम अपने बारे में जानते ही हो। तुम्हें बैठने की जगह बताई गई है तो तुम उनकी जगह पर जाकर बैठे ही क्यों? अच्छा किए वे लोग जो तुमको उठा दिये।

जब वो ये बात बोल रहे थे तो बाकी के टीचर भी सुन तो रहे होगे लेकिन सब इधर – उधर देखने लगे थे। ना सुनने का ढोंग कर रहे थे। कोई अपनी फ़ाइल में लग गया, कोई कॉपी में तो कोई अपने बैग में कुछ खोजने लगा था, लेकिन कोई भी कुछ बोला ही नहीं। क्लास टीचर हमको ही समझाने लगे जैसे की हमारी ही गलती है। माँ हमे फिर से वहीं क्लास के भीतर कोना पर बैठा दिया और टीचर हमपर ध्यान ही नहीं दे रहा था। वो सिर्फ आगे वाले लड़को को ही पढ़ा रहा था। उनको ही पूछ – बता रहा था। पूरा दिन माँ मेरा बस क्लास में बैठे – बैठे ही गुजरा। जब दोपहर में टीचर सभी की कॉपी चैक कर रहा था हम भी बोले की सर हमारा भी कॉपी चैक कर दिये तो वो बोले, अरे तुम तो सुबह वाले ही हो न, और हम तुम्हारी कॉपी छूए भी तो हम छूआ जाएंगे। तो उन्होने हमारी कॉपी भी चैक नहीं की।

माँ क्लास में वैसे भी टीचर हमारी कॉपी को छूते नहीं है। वो दूर से ही हमें पन्ना पलटने को कहते हैं और देखते रहते हैं कि काम किया है या नहीं। आज तो वो भी नहीं किए।

माँ ये सब सुनकर सकपका गई। वो भी हमारे तरह ही उदास सी हो गई। हम नहीं चाहते थे कि वे उदास हों।उ। लेकिन आज उनको बताना ज़रूरी था। नहीं तो हम इसी बात पर परेशान होते रहते और पढ़ ही नहीं पाते। वो पूरी सुनकर हमारे सिर पर हाथ लगाते हुए बोली, “हम ये बात सबसे पहले तुम्हारे पिताजी को फोन करके बताएँगे। वही सब देखेंगे ये की ये क्या हो रहा है। तुम अब अभी उनकी जगह पर मत बैठना।“

हम उनको बोले, “आप भी तो वही बोल रहे हैं की मैं उनकी जगह पर नहीं बैठूँ।“
माँ बोली, “वो झगड़ा कर लेंगे तुम्हारे साथ, इसलिए कह रहे हैं।“
हम बोले, “तो हम स्कूल ही नहीं जाये?”
वो बोली, “पहले तुम्हारे पिता जी ये बात करेंगे फिर वो गाँव पंचायत में ये बात रखेंगे। ऐसा स्कूल में नहीं होना चाहिए।“

माँ ने दूसरे दिन ही गाँव के फोन से कॉल किया और सारी बात उन्हे बता दी। पिता जी को गाँव आने में तकरीबन दस दिन लग गया था। तब तक हम स्कूल जाते तो रहे लेकिन कोना में ही बैठते रहे। जब पिताजी आए तो उन्होने गाँव के मुखिया को ये बात बताई। ये कोई छोटा मुद्दा नहीं था। मुखिया ने ये बात सुनी और बोले, “यहाँ से कुछ नहीं होगा आप जाकर शिक्षा विभाग में बात करे।“

उन्होने ये बात इसलिए बोली थी की वो भी बड़ी जाति का था तो वो टीचरों के खिलाफ कैसे हो सकता था। हमारे क्लास टीचर रामविनय प्रसाद जिस जाति के थे मुखिया भी उसी जाति का था। बहुत समय गुजर गया लेकिन कुछ नहीं बदला। हम उसी स्कूल में पढ़ते रहे और कोना में ही बैठते रहे। हमारे जैसे और भी कई बच्चे थे जो इसी तरह से पढ़ाई करते थे। हम क्यों अलग और नीचे थे,ये समझना जरा मुश्किल था ।

- दिपेन्द्र कुमार

अपने से दूर या अपने के पास

जब किसी की नजर उठे और उनकी आँखों में एक चाह और इज्जत का सुंदर सा समन्वय हो तो। ऐसी उलझन मे ध्यान जाए तो जाए कहाँ। नंदिता एक घर मे और एक ही कमरे में परिवार के साथ भले रह रही हो पर उसके ज़ज्बात और उसकी चाह के सब विरोध में हैं ।(... यहां थोड़ा घर में पसरे सामान और तनाव को लेकर कुछ बातें रहनी चाहिए.....) झुके सिर और उनमें भभकती लाल आंखें एकटक जमीन की ओर देख रही थीं । उसका शरीर स्थिर है लेकिन मन में उसके मन में विरोध के विचार मन में घुमड़ रहे थे ।

कमरे में इतना सन्नाटा था कि घड़ी की सुइयों की आवाज तेज लग रही थीं । सभी का ध्यान नंदिता की तरफ था । इस वक्त उसका फोन उससे छीन लिया गया था और अब तक घर वालों ने दोबारा उसे फोन ना देने की भी ठान ली थी । कमरे के सन्नाटा को तोड़ती मां की आवाज आई जो कि ठीक_ठाक ही महसूस हो रही थी । मां फिर पास आने लगी ।नंदिता यह बात जानती थी की मम्मी के डांटने पर उनकी आवाज कम उनके शब्द ज्यादा चोट करते हैं । अपने सिर को पकड़े चिंता भरी सख्त आवाज में मम्मी कहने लगी कि बस अब यही दिन तो देखना बाकी रह गया था । तुझे क्या जरूरत थी उस मुल्ले से बात करने की। और मुल्ले की बात तो अलग तुझे किसी लड़के से बात करने की क्या आ पड़ी थी ।इन सवालों के ढेर से घिरी अभी भी नंदिता के होठों पर खामोशी चिपकी थी।
उसे वह दिन याद आने लगी , जिस दिन उसने आफताब से पहली दफा बात की थी ।वह सोचने लगी कि उस समय तो उसने यह बिल्कुल भी नहीं सोचा था कि वह किस धर्म के लड़के से बात कर रही है। उस समय तो बस आफताब था। उसे आफताब से अपने घर आने को लेकर रोकटोक को लेकर बातें बताई थी और उसने तो समझ भी थी ।
उसके इन पुराने खयालातों में गुम रहने के चलते चुप रहने की वजह से उसकी मम्मी उसके गाल पर एक जोरदार थप्पड़ जड़ दिया। थप्पड़ की आवाज से कमरे के सन्नाटे में सेंध लगी और मां लगातार बोलती जा रही थी जो कि उसके मन को चुप्पी तोड़ने के लिए उकसा रहे थे । तभी उसके मन का गुबार फूटा और वह आंख बंद कर एक सांस में रूंधी आवास के साथ कहने लगी, "हां हां" करी मैंने बात उससे तो ऐसा क्या हो गया और किसी भी मुसलमान से बात करना कोई गलत थोड़ी है। । यह बोलते ही बगल में खड़े भाई ने नंदिता को भड़काने के स्वर में डांटा देखो जरा कैसे चिल्ला रही है और इसको इतनी भी तमीज नहीं है। ऐसी बातें चिल्लाकर नहीं की जाती हैं यह सुनते ही नंदिता फिर शांत हो गई कुछ देर बाद सभी के इस गुस्से को देख उसने बात बदलने की कोशिश की। मम्मी से फोन मांगा और स्कूल के काम करने के बहाने देने लगी ,पर मम्मी की आंखें जैसे उसका चेहरा देखना ही नहीं चाहती थीं । जरूरत से ज्यादा गुस्साई बड़ी आंखें आज नंदिता को ममताभरी आंखों से ना देख पानी की वजह से आज शायद वह चाहती थी कि आज बस नंदिता का चेहरा नजरों के सामने ना आए। नंदिता को वह सब समझ आ रहा था जो मम्मी की आंखों से जो कुछ बयां हो रहा था। नंदिता सिर्फ अपनी ही भावनाओं को तवज्जो देना नहीं जानती। उसे मम्मी ,भाई और घर के बाकी सदस्यों के गुस्से का पीछे की वजह का भी अंदाजा अच्छे से था। वह जानती थी इसकी मायने कि किसी गैर लड़के से बात करना और उस पर वह दूसरी बिरादरी का हो ।

यह किसी को भी मंजूर नहीं था मगर नंदिता आफताब को अब मना नहीं करना चाहती थी। उन दिनों जब वह अपने परिवार से कटने लगी थी । तब आफताब से अपने पूरे दिन का हाल अपने स्कूल की बातें सब कुछ बताना अच्छा लगने लगा था जिस तरह यह अपनो के बीच बात तो है। उसी तरह आफताब भी सपने पूरे दिन का हाल सुनाया करता था।

नंदिता के लिए अब वह उम्र में जब लड़कियां समाज में दिखने लग जाती है । घरवालों के लिए एक जिम्मेदारी के तौर पर हो जाती है । उस उम्र में कोई सुनने वाला चाहिए था । जो कि उसके पास है और वह उसे खोना नहीं चाहती थी। बस यही एक बात थी जो उसके मन में घर कर गई थी । उसने पहली बार अपने बारे में कुछ सोचा है । यूं तो बचपन से लेकर इस उम्र में ,जब कि उलझने ज्यादा होने लगती है ,तब तक तो उसने बहुत सी गलतियां की है और घरवालों के गलत कहने पर उसे सुधारा भी है, पर इस बात पर सभी के समझाने बुझाने के बाद भी उसे आफताब से बात करना कुछ गलत नहीं लग रहा है । उसका जी चाह रहा है कि वह अपनी स्थिति पलट कर उठे और फिर से आफताब को कॉल कर घर में घटी घटना सुना डाले । पर अभी उसके हाथ में मोबाइल ना होने के कारण वह मजबूर थी।

नंदिता ने हाथों की तरफ देखा और एक आह भरते हुए आंखें मूंद ली । उसे वह पल याद आने लगा जब वह चुपके से फोन लेकर आंखें बंद कर एक नंबर फोन में डायल किया और कान पर फोन लगाकर जीने वाली सीडी पर नजर गड़ाए कॉल पर बात करती रही थी । अचानक पीछे से भैया आए और फोन छीनकर चिल्लाकर कहने लगे कौन है , बे और फिर मुझे चिल्लाने लगे किससे बात कर रही!! है चल नीचे बताता हूं तुझे। उस वक्त उसका चेहरा बिल्कुल सफेद हो गया था । नंदिता का जी चाह रहा था ,कि मम्मी को पता चलने से पहले छत से कूद जाऊं पर भैया के हाथ रुकते तब तो कुछ कह पाती ।लगातार पड़ते थप्पड़ कुछ भी कह पाने की इजाजत नहीं दे रहे थे । नंदिता को सफाई देने का मौका ही नहीं मिला सारी बातें फोन से पता चल गई। हाथ इतनी जोर से पकड़ा की उंगलियां ठंडी पड़ गइं। भैया ने नंदिता को एक मुजरिम के तौर पर मां के सामने खड़ा कर दिया। उसके सफाई देने से पहले ही मम्मी ने नंदिता की चोटी को जोर से पकड़ ली और कमरे में ले जाकर तब तक ना छोड़ा जब तक कि भैया के दिखाएं चैट और आपसी कॉल से उठे गुबार उनके सर से उतर ना गया। पूरे बदन पर इतनी मार पड़ी थी कि नंदिता बात ना करके कोई बड़ा गुनाह कर दिया हो। इस घटना के बाद सभी को लगा कि अब अपने परिवार के विचारों के नक्शे कदम पर चलेगी ।पर उसका मन तो और कठोर हो गया उसके दिल ने अब यह सोचना शुरू कर दिया था ,कि यह अपनी जगह नही है । उसे जरूरत है किसी की जिसे वेअपनी सारी बातें कह सके ।दूसरी तरफ दुख और चोट खाया शरीर जो उसे मां की बात मान जाने को कह रहा था।लेकिन उसका मन पहाड़ की भांति टस से मस होने का नाम नहीं ले रहा था। रात को नंदिता ने मां की तकिया से फोन निकाला और छत पर जाकर फिर वही नंबर डायल किया और नंबर की बेल जाने लगी।

- कोमल

बहस की नेमत...

मैं दौड़ती हुई अपने पापा के पास गई। पापा अपने कमरे में बेड पर लेटे हुए काम से जुड़ी हुई हिसाब-किताब की एक कॉपी देख रहे थे। मुझे याद है वह दिन रविवार का था। पापा बिना काम के बहुत खुले-खुले और खुश नज़र आ रहे थे। वह थके नहीं थे। उसी समय मैं हाथों में मिठाई का डब्बा लिए उनके पास गई और उनको मिठाई खिलाई। वह टाइम मुझे अभी भी याद है। मैं कैसे भूल सकती हूँ कि उस समय 2:00 बज रहे थे। बाबू का दसवीं का रिजल्ट आया था। पापा को उनके कुछ बोलने से पहले ही मैंने मिठाई उनके मुँह में खिला दिया था। वह मिठाई बड़ी रसदार थी क्योंकि हमारे यहाँ की बड़ी फेमस मिठाई बालूशाही थी। मीठी आवाज़ में पापा बोले, 'रुको भाई मिठाई क्यों?' तब मैंने उनको बताया था कि पापा खुशख़बरी है कि मेरा छोटा भाई बाबू पास कर गया है।' गाँव में सबसे ज़्यादा नंबर अपने बाबू का ही है। मैं भी इम्तिहान में पास हो गई हूँ। यह बात सुनकर पापा एक मिनट के लिए चुप से हो गए। उनकी आँखें नम हो गईं। वह खुशी के आँसू थे।उन्होंने अपने कंधों से मेरा कंधा मिलाकर मेरे पीठ पर हाथ रख बोला कि कभी-कभी बच्चे भी कमाल कर जाते हैं। मुझे अच्छा लगा कि तुम ज़िद करके मोबाइल दिलवाई। और, आज पूरे गाँव में मेरा नाम हो रहा है। मैं घर से बाहर निकलने के लिए बेचैन हूँ। मैं घर से बाहर निकलूँगा तो सारे लोग कहेंगे कि तुम्हारे बच्चे ने पूरे गाँव का नाम रोशन किया है। वे घर से खुशी-खुशी बाहर निकल गए। मुझे एक-एक कर सारी बातें याद आ रही हैं। यह बात चार महीने पहले की है। नवंबर का महीना था।

मेरा छोटा भाई दसवीं क्लास में था। वह स्मार्टफ़ोन लेने की ज़िद कर रहा था। पापा इसके पूरे ख़िलाफ़ थे। मेरा भाई शामला-सा ऊँचे क़द का था। उम्र 16 साल की थी। पढ़ने की ललक उसमें थी। वह पापा को पूरे दिन काम करते हुए देखता था। वह कितनी मेहनत से कुछ पैसे कमा कर लाते हैं। मेरे पापा उस टाइम उतना पैसा कमा नहीं पा रहे थे। वे ठेके पर काम किया करते थे। कोरोना का समय चल रहा था। उतनी कमाई नहीं हो पा रही थी। मेरे पापा नहीं चाहते थे कि मेरा बच्चा ग़लत संगति में जाए। ऐसे मेरे पापा मिजाज़ के अच्छे इंसान हैं। वे चाहते हैं कि मेरा बच्चा हमेशा आगे रहे। हम कह सकते हैं कि वह समय सही नहीं था। हो सकता है कि मेरे पापा के पास पैसे ना रहे हों, यह तब की बात थी।

मैं पहली बार अपने भाई के लिए पापा के ख़िलाफ़ चली गई थी। क्योंकि मेरे भाई की भलाई की बात थी। क्लास बंद था। पढ़ाई नहीं हो रही थी। चारों ओर सब कुछ रहते हुए भी हमारे पास कुछ नहीं था। वह सभी के लिए बहुत बुरा समय था। कोरोना टाइम था। मेरा भाई घर में कभी इस कोने में, कभी उस कोने में, बैठे-बैठे सोच रहा था कि पता नहीं मेरे दोस्त क्या पढ़ रहे होंगे? वे सब मोबाइल से पढ़ाई कर रहे थे, उन सबको मेरे से ज़्यादा नंबर आएगा, यह बात तो उसको बेचैन किए हुए थी। वह मन ही मन भगवान को याद करने लगा, 'हे भगवान तुम मेरी परीक्षा क्यों ले रहा है? इस परीक्षा में मैं क्या लिखूँगा? दसवीं की पढ़ाई पर ज़्यादा ध्यान देना होता है, पर मेरे पास मोबाइल नहीं होने के कारण दिक्क़त आ रही थी। फिर वह किताब से ही पढ़ाई करने लगा। शाम हुई, रात हुई और पापा घर आए। वे काफ़ी थके हारे थे। ऐसा दिखने में लग रहा था कि वे काम की ज़िम्मेदारी की वजह से चिड़चिड़े से लग रहे थे। शायद वह समय ठीक नहीं था बोलने के लिए। हम लोग नादान थे।

हम लोगों ने उनके सामने अपनी बात रख दी, शायद वह मेरे भाई के लिए सही समय था। सब खाने के टाइम एक साथ आँगन में एक चटाई पर बैठे थे। पापा कुर्सी पर बैठे हुए थे। मैं, माँ और मेरे भाई ने अपनी बात रखी कि मोबाइल लेना है। पापा बोले, 'क्यों भाई?' भाई ने बोला कि इस कारण मेरी पढ़ाई नहीं पूरी हो पा रही है। वे बोले, 'नहीं! नहीं मिलेगा। हम देखते हैं कि फलनवा का बेटा 24 घंटा फ़ोन में व्यस्त रहता है। कभी उसके माँ-बाप नहीं बोलते हैं।मैं नहीं चाहता कि मेरे बच्चे मेरे से बाहर हो जाएँ। मैं मोबाइल नहीं दूँगा।' पर मेरे से रहा नहीं गया मैंने बोला, 'पापा क्या बुराई है इसमें, वह पढ़ना चाहता है।' पापा बोले मैंने कह दिया बस तो बस इस पर आगे कोई बातचीत नहीं होगी, और पापा कुर्सी पर से उठ गए। उन्होंने खाना भी पूरा नहीं खाया और अपने कमरे की तरफ़ जाते हुए बोले कि क्या हमलोग पढ़ाई नहीं किए थे? फोन नहीं था तो क्या हम नहीं पढ़े! तुमलोग भी बिना मोबाइल का पढ़ाई करो। मेरे से रहा नहीं गया मैंने बोला पापा वह टाइम कुछ और था और यह टाइम कुछ और है। हम बदल रहे हैं आप बदल रहे हैं। पापा चिल्लाते हुए ऊँची आवाज़ में बोले, मत पढ़ा मुझे। नेता की तरह मुझसे बात मत करो। तुम्हें इतनी हिम्मत कहाँ से आई? तुम्हारी नहीं, यह तुम्हारी माँ की गलती है। सर पर चढ़ा रखी है। क्या सिखाया है इसको। मेरी माँ जो चटाई पर बैठी हुई थी मेरी तरफ़ देखा, मुझे ऐसा लगा कि उन्होंने आंखों से इशारा किया कि तू चुप हो जा। मैं माँ की बातों को अनदेखा करते हुए एक बार फिर से बात करने की कोशिश की। पापा को समझाने का प्रयास किया, 'पापा उसके अंदर वह ललक है कि वह पढ़ाई ही करेगा मुझे उसपर विश्वास है। आपका भी कहना सही है क्योंकि हमारे आसपास के जो माहौल है उसको देख क रही आप बोल रहे हैं। आप अपने बच्चों पर थोड़ा सा भरोसा कीजिए, कम से कम परवरिश पर तो भरोसा कीजिए। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरी बातों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे कभी मोबाइल नहीं देंगे। मुझे ना चाहते हुए भी अपनी आवाज़ को तेज़ करना पड़ा। मैंने बोला कि पापा मैं इसको फ़ोन लाकर दूँगी। पापा ने मुझे घूरते हुए बोला कि दो पैसे कमाने लगी हो तो मामा बन मुझे नीचा दिखा रही हो। जितना भी पैसा आएगा वह चुपचाप माऋ को लाकर देना। मुझे कुछ और भी काम है। हम बोले ठीक है आपको महीने का पैसा मिल जाएगा। मैं भी अपने पापा का हाथ बँटा रही थी। मैं एक संस्था में काम करती थी। मैं बोल रही थी तब मैं बहुत डर रही थी, शायद मेरे पैर काँप रहे थे। मुझे लगा कि अगर मैं अभी नहीं बोलूँगी तो समय निकल जाएगा। पापा ज़ोर से दरवाज़ा बंद करते हुए कमरे में चले गए। तब मेरा भाई मेरी तरफ़ देखते हुए बोला कि लगता है कि फ़ोन मुझे नहीं मिल पाएगा। दीदी तू मेरे लिए पापा से लड़ाई मत कर। मैं कर लूँगा पढ़ाई। माँ बोली मैं सुबह बात करूँगी। शायद उनका मूड कुछ अच्छा हो जाए। वह कमरे में सोने चली गईं। मेरे मन में उधेड़बुन चल रहा था। मैं पूरी रात सो नहीं पाई। मेरे भाई कि पढ़ने की जो ललक थी वह मुझे सोने नहीं दे रहा था। सुबह हुई। सब अपने-अपने काम में व्यस्त हो गए। मैंने देखा कि माँ पापा को समझाने का प्रयास कर रही हैं कि उसे भी स्मार्टफ़ोन दिला दीजिए। पापा ने कहा कि अभी पैसे की स्थिति अच्छी नहीं है, और ऊपर से बच्चे बिगड़ जाएँगे। पापा ड्यूटी पर चले गए।

मैं अपनी माँ को बहुत नजदीक से देख रही थी कि वह कुछ पैसा गुल्लक में जमा करती थी। उस गुल्लक को मैंने तुरंत फोड़ दिया। उसमें ज़्यादा पैसे तो नहीं हो पाए थे, 3700 रुपये था। मैं पापा का जवाब जान चुकी थी। पैसे लेकर मैं बगल के बाजार में गई। मैं उस दुकान पर गई जो मुझे पहले से जानते थे। मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि मैं आपको क़िस्त पर पैसे दूँगी। वह तैयार हो गया। मैंने रेडमी कंपनी की फ़ोन पसंद की। उसकी क़ीमत 75 सौ रुपए थी। मैं बहुत खुश थी कि मैंने अपने भाई के लिए फोन लिया। वह ज़्यादा महँगा तो नहीं था पर ऐसा था कि वह पढ़ सके। मैं शाम को अपने भाई के पास गई और फोन दिया। वह पहले तो बहुत खुश हुआ। तुरंत बाद वह रोने लगा था। मैं बोली अब क्या हुआ, जो तू रो रहा है? वह बोला कि यह कैसी खुशी है जिसमें मेरे अपने मेरे ख़िलाफ़ हैं। मैं बोली थी यही तो करना होता है कि सबको अपने ऊपर इतना विश्वास दिलाओ कि तेरी कमज़ोरी ताकत बन जाए। मेरी बात को सुनकर ऐसा लगा कि उसके अंदर एक जुनून पैदा हुआ। उसने बोला कि मुझे इस फ़ोन से पढ़ाई कर सबको यह बताना है कि फ़ैन ख़राब नहीं है। यह हम पर डिपेंड करता है कि मैं उसको किस तरीक़े से इस्तेमाल कर रहा हूँ। सबकी सोच को बदलना है और ख़ास करके अपने घर वालों की। फ़ोन लेकर वह कमरे में चला गया। मैं उसकी बात सुनकर बहुत खुश हुई थी। और आज का दिन है। बस एक पहल की ज़रूरत होती है और ज़िंदगी बेहतर होने लगती है। मुझे विश्वास था कि वह अच्छा करेगा। अच्छे दिन इसी तरह आते हैं।

- मौसम

क्या लिंग से निर्धारित होता है मौत या जीवन

आज के मेरी कहानी शुरू होती है हमारे गांव मे रहने वाली अदिति से।

अदिति विद्या मंदिर मकॉलेज से ग्रेजुएशन की पढ़ाई कर रही है। बहुत ही शांत स्वभाव की बहुत अच्छी थी। सभी इसके अच्छे स्वभाव के कारण उसको बहुत प्यार करते अदिति मम्मी पापा की इकलौती बेटी है ।उसके पापा एक निजी बैंक में मैनेजर है उसकी मम्मी ग्रहणी है। अदिति के ग्रेजुएशन होते ही उसके पापा ने उसके लिए लड़का देखना शुरू कर दिया।

अदिति अच्छे स्वभाव के कारणउसके लिए काफी रिश्ते आए। आखिरकार अदिति की शादी पटना में रहने वाले ईशान के साथ हो गई ।अदिति की तरह इस साल भी इकलौता लड़का था। उसके घर में उसके अलावा उसके मम्मी पापा थे ।ईशान पटना के एक कंपनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर था ।अतिथि बहुत खुश थी कि उसकी शादी इतने अच्छे घर में हो रही है। लड़के वालों ने अदिति को देखते ही अपनी बहू मान लिए।

1 महीने बाद दोनों की शादी की मुहूर्त निकला ।अदिति लाल रंग के जोड़े में बहुत ही सुंदर लग रही थी। देखते हीदेखते अदिति और ईशान की शादी हो गई और अदिति ससुराल आ गई। उसने आते ही पूरे घर को संभाल लिया और अपने सास-ससुर की सेवा में जुट गई। सब कुछ अच्छे से चल रहा था ।अदिति के ससुराल वाले भी किसी को पाकर बहुत खुश थे ।ऐसे ही ईशान और अदिति की शादी को 1 साल पूरा हो गया। एक दिन अदिति घर वालों के पास उसके ससुराल वालों का फोन गया कि अदिति हम सबको इस दुनिया से हमेशा के लिए छोड़ कर चली गई।

यह सुनते ही अदिति के मम्मी पापा के पैरों तले से जमीन खिसक गई ।उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था कि यह सब कैसे हो गया। वे दोनों पटना के लिए निकल गए।अदिति को मृत पड़ा देख उसकी मां तो बेहोश होकर गिर पड़ी सबका रो रो कर बुरा हाल था इसी तरह अदिति की। अंतिम विदाई की रस्म पूरी हुई ।अदिति के मम्मी पापा भी घर वापस आ गए ।वह दोनों तो अभी भी सदमे में ही थे ।फिर जैसे-जैसे उन्होंने एक-दूसरे को संभाला। ऐसे ही 3 महीने गुजर गए 1 दिन आदित्य के पापा ने ईशान बात की उन्होंने कहा हम चाहते हैं कि तुम अपनी जिंदगी में आगे बढ़ो और दूसरी शादी कर लो। ईशान अदिति से बहुत प्यार करता था इसलिए ईशान ने इस प्रस्ताव को साफ मना कर दिया लेकिन

अदिति के पापा ने अदिति की आत्मा की शांति को लेकर ईशान को शादी के लिए मनवा दिए परंतु ईशान का कहना था कि मैं शादी कर लूंगा पर लड़की बिल्कुल अदिति जैसी होनी चाहिए। उसके सारे गुण अदिति जैसी होनी चाहिए ।अदिति के पापा ने बोला हमें मंजूर है ।वह इसलिए क्योंकि अदिति की मौसी की बेटी तनवी बिल्कुल अदिति जैसी है। ईशान बोला हां मैंने अदिति से कई बार तन्वी के बारे में सुना है। अदिति के पापा बोले हां वह बहुत अच्छी लड़की है। क्योंकि तुम्हारी शादी के वह अपनी पढ़ाई के लिए दूसरी शहर गई हुई थी और परीक्षा के कारण वह तुम्हारी शादी में नहीं आ पाई थी पर अब वह पढ़ाई करके वापस आ गई है ।ईशान ने पूछा उसके घरवालों शादी के लिए राजी होंगे। अदिति के पापा बोले तुम चिंता मत करो मैंने सब से बात कर ली और किसी को कोई दिक्कत नहीं है। इंसान ने कहा तो ठीक है ।मैं भी मम्मी पापा से बात कर लेता हूं ।फिर ईशान ने अपने मम्मी पापा को सारी बात बता दी। उसके मम्मी पापा भी इस शादी के लिए मान गए कुछ दिनों के बाद सादे तरीके से ईशान और तनवी की शादी हो गई। तन्वी बिल्कुल ही अदिति की परछाई थी ।वह अपने सास-ससुर की सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ती थी। ।धीरे-धीरे किसान ने भी तन्वी को पूरे दिल से स्वीकार कर लिया। सब बहुत खुश थे एक दिन ईशान के परिवार को उनके रिश्तेदार के यहां से शादी का न्योता आया। वहां जाने के लिए तैयार हो गए पर तन्वी के तबीयत कुछ ठीक ना होने के कारण उसने सब से कहा। मैं आप सबके साथ नहीं जा पाऊंगी। मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं लग रही ।आप सब चले जाइए इंसान ने बोला हमारे पास रुक जाता हूं। मम्मी पापा चले जाएंगे तन्वी ने बोला नहीं नहीं अगर आप नहीं जाओगे तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा ।कि मेरी वजह से आपका जाना कैंसिल हो गया ।आप जाइए मेरी चिंता मत कीजिए। मैं ठीक हूं ।बस थोड़ा सिर में दर्द है दवाई लेकर सो जाऊंगीतो ठीक हो जाऊंगी ईशान ने बोला चलो ठीक है।पर अगर किसी भी चीज की जरूरत हो तो मुझे फोन कर देनातन्वी ने ठीक है कहा। सब चले जाते हैं तन्वी भी दरवाजा बंद करके अंदर आ जाति। हैं और घर की तलाशी लेने लगती है ।हाथों में कुछ कागज लगता है ।वह उस कागज को पड़ती है पढ़ते ही

तो कुछ समय के लिए उसके पैरों तले जमीन खिसक जाती है। अचानक ईशान घर आ जाता है और कहता है तुम्हारी चिंता हो रही थी। इसलिए मैं जल्दी आ गया तन्वी ने ईशान से कहा।
मुझे आपसे कुछ पूछना है ?ईशान कहा पूछो दीदी की प्रेग्नेंसी की बात आपने हम सब से क्यों छुपाई ?मैं और अदिति सबको बताने वाले थे ।सोचा था एक पार्टी ऑर्गेनाइज करके सबको सबको सरप्राइज देंगे ।तन्वी ने कहा झूठ मत बोलिए ।आपको यह पता करना था कि दीदी के पेट में जो बच्चा है वह लड़का है या लड़कीk इतना कहते इतनी भी ने वह कागज ईशान के मुंह पर मारी ईशान उन पेपरों को पढ़कर एकदम चुप हो गया। इंसान को चुप देखते ही बोली मैंने यह शादी इसलिए की ताकि मैं पता लगा सकूं कि आखिर मौत कैसे हुई ?ईशान ने मैं कसम खाकर कहता हूं ।मुझे इस बारे में कुछ भी पता नहीं है। मैं तो अदिति के मौत के दो दिन पहले ही मुझे ऑफिस के काम से बाहर जाना पड़ा था ।और यह बात सच था ।तन्वी ने इशान से से कहा मुझे माफ कर दीजिए kमुझे लगा कि आप ही दीदी की जान जान ली है और उन दोनों ने असली गुनहगार को पकड़ने के लिए प्लान बनाया ।अगले दिन वह दोनों ईशान के मम्मी पापा से कहते हैं ।तन्वी प्रेग्नेंट है। वे दोनों बहुत खुश होते हैं ।इशांन ने कहा मुझे 2 दिनों के लिए बाहर जाना होगा तो आप दोनों तन्वी का ख्याल रखना अगले दिन ईशान चला जाता है ।उसके जाते ही तन्वी के सास-ससुर उसे थोड़ी देर में उसे अस्पताल ले गए और बोले कि कुछ टेस्ट करवाना है ।टेस्ट करवा को उसे घर लाते हैं और कहते हैं कि तुम्हें इस बच्चे को भी गिराना पड़ेगा क्योंकि यह लड़की है और हमें लड़का चाहिए ।तुम्हारी बहन अदिति को भी इसी वजह ससे जान गई और लगता है कि अब तुम्हें भी तुम्हारी बहन के पास पहुंचाना पड़ेगा यह बोलकर दोनों उसकी तरफ बढ़ते ही लगते हैं। तभी ईशान पुलिस को साथ लेकर आ जाता है और उनको गिरफ्तार करवा देता है | उनके जाने के बाद ईशान अदिति को याद करके रोने लगता है तभी उसे संभालती अदिति की मम्मी पापा को भी जब यह बात पता चलता लगती है |तो वह भी रोने लगते हैं| और तन्वी का शुक्रिया अदा करते हैं |क्योंकि तन्वी की वजह से ही अदिति के गुनाहगारों को सजा मिल पाई थी |

समाज में यह अवधारणाएं समाज को हत्यारा बना रही है | समाज में चाहे लड़का हो या लड़की सभी को एक समान जीने का हक है|

- नयन कुमार
संस्था :- दिशा बिहार मुंगेर

इंसान बड़ा या सुर्णमे

वह नवंबर का महीना था सुबह-सुबह मम्मी की कुकर की सीटी की आवाज के साथ नींद खुल गई उम्मीद तो नहीं थी कि चाय भी मिलेगी किसी और का दोष नहीं है मैंने ही खुद अपनी ऐसी हालत बना रखी है जब मैं बेड से उठ कर कमरे से बाहर आया तब मैंने देखा कि मेरे आंगन के एक छोटे से कोने में पिंजड़े में एक तोता है जिसका नाम पीहू है उसके कटोरी में दाना चला गया है लेकिन हमको अभी तक चाय भी नहीं मिली किचन से मम्मी के आने की आहट महसूस हुई वह चिल्लाती हुई धम धम की आवाज के साथ आई और उसने बिना कुछ बोले मेरे हाथों में थैला थमा दिया यह बोलकर की ठंड की मौसम है जा नया आलू बाजार से ले आ आज सोच रही हूं आलू का रोटी बना दूं मैं कुछ बोल नहीं पाया और मेरे हाथों में मैं मम्मी ने सौ का नोट पकड़ा दियाफिर मम्मी ने मुझको घूमती हुई आंखों से देखा फिर मैं बिना किसी समय को गवावे हुए चुपचाप बाजार की ओर चल पड़ा लगभग 10 मिनट बाइक चलाने के बाद मैं बाजार में पहुंचा तो वहां काफी भीड़ थी तो मैं धीरे-धीरे सब्जी के मंडी के तरफ बढ़ने लगा फिर अचानक मेरी नजर एक शख्स पर पड़ी लेकिन वह मेरे सामने से नजर चुरा कर निकल गया इसे देख मैं उस समय बहुत दुखी हुआ क्योंकि यह पल मेरे लिए उन पलों में से था जिससे मैं हमेशा दूर भागता रहातभी मेरे मन में एक विचार आया वह बचपन के दिन ही अच्छे थे जब लोग सरनेम से ज्यादा बच्चों को महत्व देते थे यह कहानी राहुल और अमन नाम के दो दोस्तों के बीच की है जिसके बीच एक जाति नामक शब्द ने इन दोनों दोस्तों के बीच में दरार डाल दी इसमें राहुल वह लड़का है जो अपनी मां के कहने पर आलू लाने बाजार गया था और अमन वह शख्स है जो राहुल को बाजार में मिला यह घटना जुलाई माह की है दिसंबर से ठीक 6 माह पहले कीचमड़े को जला देने वाली तपती गर्मी के बीच राहुल अपने दोस्त के बहन के शादी में गया हुआ था वहां वह अपने पुराने मित्रों से मिला और शादी में ऐसे मित्र भी आए हुए थे जिसे राहुल सालों बाद मिल रहा थातो वहीं कुछ दोस्तों से राहुल का लगाओ भाई जैसा था शादी के इस माहौल में सभी दोस्तों ने मिलकर स्कूल की वह पुरानी बातें शुरू कर दी जो वह सब मिलकर एक साथ व्यतीत किए थे सब ने एक-एक करके सारी बातों का जिक्र करना शुरू किया कि कैसे वह साथ में स्कूल जाया करते थे फिर साथ में खेलते और पढ़ाई करते थे उन सभी दोस्तों में अमन भी शामिल था जो हमेशा राहुल को हर चीज में नीचा दिखाना या अपने से कम साबित करने में लगा रहता था जैसे कि राहुल की आर्थिक स्थिति को लेकर या उसके पढ़ाई के ऊपर अगर इन चीजों में उसकी दाल नही गलतीतो वह उसके भाषा के ऊपर शुरू हो जाता क्योंकि राहुल हमेशा घर में भोजपुरी ही बोलता थादोस्तों के बीच कुछ समय के बात चीत के बाद अमन राहुल को लेकर शुरू हो गया कि राहुल के पिता खेती करते हैं और वह अपने घरों में भोजपुरी भाषा का प्रयोग करता है लेकिन

राहुल अमन के इन सभी बातों का बुरा ना मान कर उसने सभी बातों को हंसकर टाल दिया फिर राहुल कुछ समय दोस्तों के साथ व्यतीत करने के बाद खाना खाकर अपने घर की ओर निकल गया करीब 20 मिनट बाद मोटरसाइकिल चला कर वह अपने घर पहुंचा लेकिन यह सारी बातें अभी भी राहुल के दिमाग में चुंबक के समान चिपकी हुई थी समय के साथ कई दिन बीत गए लगभग 1 महीने बाद राहुल ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर सम्राट अशोक से जुड़े तथ्य शेयर कियाजिसमें अशोक सम्राट ने अखंड भारत का निर्माण कराया था किस प्रकार मौर्यों ने कलिंग युद्ध लड़ा राहुल के शेयर करने के करीब आधे घंटे बाद अमन ने राहुल को मैसेज किया कि तुम अपने नाम के आगे सिंह क्यों लगाते हो सिंह सरनेम केवल राजपूतों और सिखों के लिए बना है ना कि तुम्हारे लिए राहुल ने अमन को विनम्रता पूर्वक उसके प्रश्नों का उत्तर दिया कि ऐसा कहीं लिखा नहीं की सिंह सिर्फ राजपूत या सीखी लगाएंगे हमारा भारत स्वतंत्र है यह सुनकर अमन तिलमिला उठा फिर वह अपने आचरण को तार-तार करते हुए गलत शब्दों का प्रयोग करना शुरू कर दिया वह यह भी भूल गया की उसके घर में मां और बहन भी है कुछ समय के बाद बाद राहुल ने अमन की बातों को अनसुना करना आरंभ कर दिया फिर अमन यह देख उसने अपने मवाली मित्रों को राहुल के बारे में बताया फिर सब मिलकर राहुल को परेशान करने में लग गए राहुल इनकी बातों का अनसुना करके सबको एक-एक करके ब्लॉक कर दिया क्योंकि वह जानता था कि वह कितना भी कोशिश कर ले लेकिन वह राहुल का मुकाबला नहीं कर सकता था दोनों में जमीन और आसमान का अंतर था फिर कुछ दिनों बाद अचानक राहुल के फोन की घंटी बजी तो देखा कि अमन उसको को बार-बार कॉल कर रहा था फिर राहुल ने उसका कॉल उठाया तो पाया कि अमन गुस्से में था और वह लगातार उसको धमकी भरी बातें बोलने लगा लेकिन राहुल को इन सभी बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता था वह शुरू से जाति नामक शब्दों से दूर भागता रहा था लेकिन फिर भी यैसी घटना ना चाहते हुए भी उसके साथ हो रही थी वह बार-बार मन में सोचता था कि मैं अपने नाम के आगे अपना सरनेम भी नहीं लगा सकता क्या मैं इतना बुरा हूं कहीं ना कहीं राहुल को इस बात का पछतावा था जो कुछ अमन और राहुल के बीच हुआ वह नहीं होना चाहिए था एक छोटे से सरनेम के कारण दोनों के बीच की दोस्ती अब दुश्मनी में बदल चुकी थी राहुल इस बात को लेकर बहुत उदास रहने लगा लेकिन इसके विपरीत अमन को इस बात का पछतावा बिल्कुल भी नहीं था वह जाती नामक शब्दों के बंधन में फंस चुका था और अमन इस बात से काफी अनजान हो गया था कि अगर हम अपनी जाति को आगे बढ़ते हुए देखना चाहते हैं तो हमें अपने आप को इस काबिल बनाना चाहिए कि लोग अपने बच्चे को उसकी मिसाल दे और अपने बच्चे को उसके जैसा बनने के लिए कहेय चाहे वह कोई भी जात के हो ना कि अपने नाम के आगे अपना सरनेम लगाकर अपनी जाति को आगे बढ़ाने का सपना देखे अब समय लगातार बीतता जा रहा था जो अमन और राहुल के बीच गहरी दोस्ती थी वह बिल्कुल खत्म हो चुकी थी अब कभी उन दोनों का आमना-सामना भी होता तो वह एक दूसरे से नजर चुरा कर आगे बढ़ जाते जैसा कि वह कहानी के प्रारंभ में एक बाजार में मिले थे और अमन अपने नजरे चुरा कर वहां से आगे निकल गया था

- प्रिस कुमार (भूमिका विहार)

अपने बचपन के दिन कोई कैसे भूल सकता है मेरी तो बात ही अलग है मेरीसे तो मेरी मम्मी भी परेशान रहा करती थी छुपन छुपाई गिल्ली डंडे खेल में इतने मगन की खाने तक की भी याद नहीं रहती थी
वह स्कूल का दिन जब हम अपने स्कूल शौक से नहीं अपने मां पापा के खौफ से पढ़ने जाते थे
फिर वह पल आए वह दौर आए जो हमें पढ़ाई के महत्त्व को समझें ऐसे ही स्कूल आते जाते हैं दिन गुजर रहे थे और अपनी भी पढ़ाई चल रही थी
और पढ़ाई के पड़ाव पर एक-एक कर के आगे की ओर बढ़ते जा रहे थे जिंदगी मैं बहुत सारे दोस्त मिले कुछ अच्छी बातें शिखा गए हैं तो कुछ अपनी आदत सिखा गया कुछ तो तनाव के मोड़ पर छोड़ गए
अब वह दौर चल रहा है जब लोग गर्ल्स और वॉइस की बीच के भेदभाव को लेकर बातें करते हैं इस बात को लेकर समाज में बहुत सारी गंदगीया फैली होती है कुछ ऐसा ही मेरे साथ भी हुई
उस समय की बात है जब मैं सिक्स क्लास में पढ़ा करता था कभी वह दिन थे जब हम सबके प्रिय माने जाते थे कभी अपने टीचर के सबसे चाहिता हुआ करते थे उन दिनों अपने दोस्तों की एक छोटी सी टोली भी हुआ करती थी खेलकूद में आ गए हो या ना हो लड़ाई करने की क्रम में सबसे आगे हुए करते थे लेकिन उस दिन एक लड़की से लड़ाई हो जाने की वजह से जो अपने आप में शर्मिंदगी एहसास करा रही थी
वह दिन मुझे आज भी याद है जो saturday का दिन था और उस दिन लड़के तथा लड़कियों के बीच सिंगिंग कंपटीशन चल रहे थी सभी बच्चे खुश थे कुछ लोग एक दूसरे पर कमेंट कर रहे थे कुछ अलग बातें कर रहते हैं और अपने में जोरो से हंस रहे थे उस समय लड़के का ग्रुप लीड में चल रही थी सभी लड़कियों की ओर से जो अंजलि थी वह लड़की के ऊपर कमेंट पास करने लगे बातों बातों में कहने लगी लड़की चीट कर रहे हैं लड़के बदतमीज होते हैं उनको किसी बात की शर्म नहीं आती ऐसे ही दो चार बातें झट से बोल डाली और वह वही नहीं रुकी कुछ ऐसे बोलने लगी मानो की अपने आपको कहीं की महारानी समझ रही हो आप सभी लड़के को अपना गुलाम मानती हो इसकी इन हरकतों की वजह से मैंने भी उसे मोटी भैंस चुड़ैल दिमाग की पैदल सुना डाली
उस समय हमारी स्कूल की अब छुट्टी या होने ही वाली थी और टीचर भी क्लास में नहीं थे जिससे हम दोनों की लड़ाइयां एक अलग ही मोड़ ले रही थी तब तक मैं दोगुस्से से भी लगा डालें और कुछ लड़कियां भी इकट्ठा हो रही थी तब तक कुछ मेरे दोस्त भी आगे दो लोगों के बीच की लड़ाई अब पूरी क्लास में फैली जा रही थी
अब हमारी स्कूल की छुट्टियां भी होने वाली थी तभीAnjali ने हमारे लड़ाई हो के बारे में क्लास टीचर कोकंप्लेन कर दी तब तक हमारी स्कूल की छुट्टी हो गई और सभी अपने घर की ओर चल पड़े और घर पहुंच कर अपनी पीठ की beg को यू उतार कर बैड पर फेक डाला अगले दिन में स्कूल नही जाने वाला था क्योंकि sunday की छुट्टीया थी

Monday की दिन नई सूरज की किरणों के साथ नई उम्मीद को मन में लेकर इस बात से अनजान कि आज हमारे साथ क्या होने वाला है अपने स्कूल पहुंचे इस ख्वाहिश को लेकर कि अब सब नॉर्मल होगा लेकिन मेरे सोच से कुछ ज्यादा ही हालात खराब थे
कुछ मुझे तो ऐसे देख रहे थे कि मानो कि मैं अंजली का खून कर दिया तभी टन टन की आवाज मेरे कानों तक गुजी और आवाज हमारे प्रे की घंटी की थी सभी बच्चे एक कतार में खड़े हो गए प्रेऔर क्लास में चले गए
क्लास की पहली घंटी लगी हमारे क्लास टीचर अब आने ही वाले थे और आते ही ना तो हमारी अटेंडेंस हुई यहां तक कि गुड मॉर्निंग बोलने तक की भी किसी भी बच्चे को मौका नहीं दिया
वह कड़ी आवाज में बोलते हुए धीरज आया है क्या आज स्कूल तभी मैंने अपने हाथों को ऊपर की और सर के सामने जा खरे हो गया ना सर ने कुछ पूछा लगे हाथ पनिशमेंट के नाम पर कई छडिया रसीद कर दी
शिक्षक ने डाते ते हुए जोर से बोला तुम बेशर्म हो गए हो तुम्हें लड़कियों से बात करने की तमीज नहीं है और तुम तो उसे मारने भी भिड़ गए थे
तुमने उसे गालियां क्यों दी यहां तक की मेरे परिवार वालों पर भी सवाल उठने लगे तुम्हें घर में कोई भी लड़कियों से बात करने की तमीज नहीं सिखाता है क्या यह किसी से कैसे बात की जाती है सर तो अब यह भी बोलने लगे थे कि तुम्हारी बहन को कोई मोटी बोले या गालियां दे तो तुम्हें कैसी लगी सर वो सारी बात बोल दी जो मैंने शायद बोली भी न थी हम दोनों के बीच की लड़ाई सिर्फ लड़की के बातों को ही सुनकर निर्धारित कर दिया गया इसे मैं सिर्फ तुम्हारी गलती है
मुझे तो कुछ बोलने की मौके भी नहीं दिए गए क्या सिर्फ मेरी ही गलती आती थी
तब जा कर मुझे ऐसा फील हुआ काश में लड़की होता चाहे जितनी भी गलतियां कर लेता किसी को भी कुछ बोल भी देता तो सारी गलतियां सामने वाले की ही होती
टीचर ने एकतरफा न्याय क्या वह यह नहीं समझ पा रहे थे कि गलतियां दोनों की है
अब अब तो टीचर की एक तरफा न्याय की वजह से मेरी पढ़ाई में पहले की तरह रुचि नहीं रही अब तो मैं स्कूल जाना भी कम कर दीया था
यह थी मेरी उन दिनों की स्कूल की कहानी
जो मेरे साथ ना होते हुए भी हुआ कुछ स्कूल टीचर के नजरों में विलन सा बन गया था

- राजा कुमार (भूमिका विहार)

जब मैं 13 वर्षा का था मेरे पिता जी का मोटरसाइकल दुर्घटना में सर में चोट लगी और बे पागलो जैसे हो गए जिसके कारण वह किसी भी काम करने में असमर्थ थे उस समय घर में खाने की परेशानियां होने लगी क्योंकि कमाने वाले तो बीमार थी हम चार भाई एक बहन जिसमें मैं सबसे बड़ा और एक हमसे छोटी बहन और तीन छोटे-छोटे भाई थे तो घर की सारी जिम्मेदारियां मुझ पर आ गई तब मैं 6वि में पढ़ता था उस वक्त मानो मुझ पर ऐसा मुसीबतों का पहाड़ गिरा हमें कुछ समझ ही नहीं आ रहा था की मैं क्या करूं घर को संभालो अपनी पढ़ाई करू या भाई बहन को बढ़ाएं फिर मैंने अपनी 3 कट्ठा जमीन(भूमि) था उसी का खेती करने लगा और उसको लगाने के लिए जो पैसे खर्च आता वह मैं किसी की खेतों में काम कर पूरा करता जैसे किप्याज का बीजा रोपण आलू का बीजा रोपण धान कटाई जैसे काम करने लगा जिसमें हमें 110 रूपिया मिलता पर उससे हमारी घर की परेशानी में कोई सुधार नहीं हो पा रही थी तो उस वक्त मेरे मन में ख्याल आया कि मेरे चाचा का बेटा है जो ऑटो चलाते हैं तो मैं उनके पास गया और उनसे बोला कि मैं भी सीखना चाहता हूं उन्होंने बोला कि तुम अभी बहुत छोटे हो यह तुमसे नहीं हो पाएगा परहमें तो सीखना मेरी मजबूरी थी क्योंकि हमारे घर की परेशानियां बहुत खराब थी मैंने जैसे-तैसे कर उन्हें मना लिया और वह हमें सिखाने को मान गए वह बोले ठीक है कल से आ जाना इस पूरादिन और रात सोचा कि ऑटो तो कल जाऊंगा सीखने, पर मेरी यह भी परेशानी बनने लगी कि कल जाऊंगा सीखने तो घर का काम कैसे होगा पूरा दिन उधर ही रह जाऊंगा तो फिर सोचा कल जाता हूं एक ही दिन उसके साथ रहा लूंगा ना और रात को सोचता सुबह 4:00 बजे नींद खुल गई मैं उसी वक्त मुँह हाथ धोया और उसके पास गया बोला कि भाई कब जाइएगा उन्होंने बोला रुको खाना वाना खा कर चलते हैं तो काफी समय इंतजार किया और वह वक्त आ ही गया और वह बोले कि ठीक है चलो उन्होंने फोटो को रस्सी की सहायता से चालू किया वहां से जैसे ही रोड पर गए तो एक व्यक्ति ने बोला कि हमें रिजर्व करवानी है तखत ले जानी है भैया बोले ठीक है ताकत को रस्सी की सहायता से बांध दिया और ले जाने लगे कुछ दूर जाने पर विकास ने बोला अब तुम चलाओ ऐसे बोल कर हमें दे दिए लेकिन ब्रेकपर पैर खुद रखे हुए थे और मुझे बस ऑटो का हैंडल संभालने को दे दिया हमने हैंडल तो पकड़ा पर तो ऑटो रोड के किनारे जाने लगा तो उन्होंने गुस्से से बोला ऐसा नहीं देखो कभी साईकिल चलाएं हो मैंने बोला हां चलाएं हैं तो बस वैसे ही सोचो कि यह साइकिल है और इसमें एक्सीलेटर है बस उसी को कम ऑटो तो धीमा धीमा चलेगा फिर हमें हैंडल दिया मैं हैंडल पकड़ा और धीमा धीमा एक्सलेटर एटा चलाता गया भीड़ जहां रहता मेरा हाथों से वहां हैंडल ले लेते थे फिर हमें ही दे देते थे ऐसे जाते रहे वहां पहुंच तखत उतारा फिर वहां से लौटे उसी प्रकार वह ब्रेकपे पर पैर रखे और मैं हैंडल संभालते घर शाम को पहुंचा इसी प्रकार लगभग 20-25दिन लगा और सीख गया फिर भी मेरी परेशानियां कम नहीं हुई जब मैं चलाने लगा जब मैं ऑटो चलाता तो लोग मेरे ऑटो में बैठने से डरते और सब तो मजाक भी उड़ाते कि देखो ना कितना छोटा बच्चा ऑटो चला रहा है पर हमने सभी की बातों को अनसुना कर चलाता गया क्योंकि हमको पता था कि क्या मेरी परेशानियां हैं 13 साल की उम्र में मुझे ऐसा लगने लगा था कि अब बचपन खत्म हो गया मम्मी मुझे देखकर कभी खुश होती तो कभी दुखी मैं जब थोड़े से ही पैसे उनके हाथ में पकड़ा था तो उनकी आंखों में आंसू रहते थे हमें समझ में ही नहीं आया कि वह रोती क्यों थी अब में समझ गया था कि अब मुझे आगे क्या करना है

- सुरज कान्त